रेडियो

रेडियो बहुत उपयोगी आविष्कार है। इसके द्वारा ही समुद्री जहाज के नाविक संसार से अपना सम्पर्क बनाए रहते हैं। यदि वे विपत्ति में फैस जाएं तो रेडियो-संदेश भेजकर सहायता मँगा लेते हैं।

रेडियो से कुछ ही क्षणों में आवश्यक समाचार सारे संसार में प्रसारितकर दिए जाते हैं। इससे हम घर बैठे उन्हें सुन सकते हैं। रेडियो से हम हजारों मील दूर गाये जाने वाले गाने, समाचार आदि सुन सकते हैं।

तालाब में यदि हम पत्थर फेंकें तो उसमें लहरें उठती हैं। उसी प्रकार रेडियो प्रसारण यन्त्र ध्वनि तरंगें आकाश में फैंकते हैं। वे सारे संसार में फैल जाती हैं। ध्वनि की गति 2,97,600 किलोमीटर प्रति सैकिण्ड है। इसलिए हम अमेरिका, रूस आदि के रेडियो से प्रसारित आवाज अपने यहाँ मिनटों में सुन लेते हैं।

ध्वनि-प्रसारण करने का स्थान, प्रसारण केन्द्र या रेडियो स्टेशन कहलाता है। भारत के सबसे बड़े ध्वनि प्रसारण केन्द्र को 'आकाशवाणी'कहा जाता है। यह नई दिल्ली में है। प्रसारण केन्द्र में लगे यन्त्र ध्वनि को बिजली की तरंगों में बदलकर वायुमण्डल में फैंकते हैं। जिस यन्त्र के सामने मुँह करके मनुष्य बोलता है, उसे माइक्रोफोन कहते हैं। कुछ ऐसे यन्त्र होते हैं जो उन विद्युत तरंगों की शक्ति को कई गुना बढ़ा देते हैं। ये तरंगें एक विशेष परिमाण के अनुसार वायुमण्डल में प्रसारित की जाती है, जिससे कि वे अन्य केन्द्रों की तरंगों से न टकराएँ।

हमारे घर में जो रेडियो सेट होता है उसे रिसीवर सेट कहते हैं। वह ध्वनि की विद्युत तरंगों को ग्रहण करके फिर ध्वनि में बदल देता है। और रेडियो सेट में लगा लाउड-स्पाकर उस ध्वनि को कई गुना बढ़ा देता है। रेडियो हमारे जीवन का इस तरह आवश्यक अंग बन चुका है, जैसे कि विद्युत।